1. प्रस्तवाना:

" विद्या बिन मति गई,
मति बिन नीति गई,
नीति बिन गति गई,
गति बिन धन गया ,
धन बिन शुद्र पतित हुए,
इतना घोर अनर्थ मात्र अविद्या,
के कारण ही हुआ |"

.... महात्मा ज्योतिराव फुले

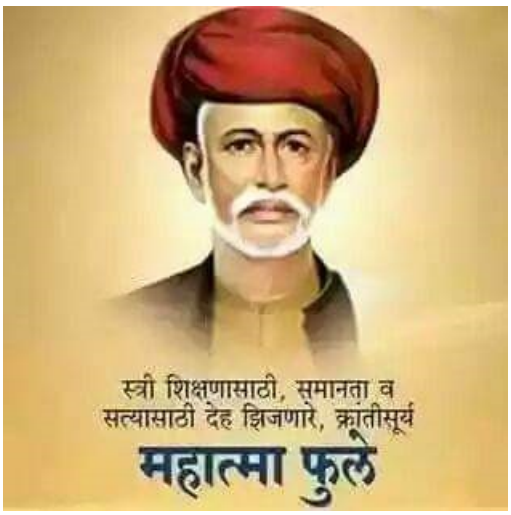

क्रांति याने आमूलाग्र परिवर्तन की चिंगारी| हिंदू समाज के शुद्र,अछुत और स्त्री जाति कों इसी क्रांति के कारण गुलामी से मुक्ति मिली| आधुनिक महाराष्ट्र में इसी क्रांति की लहर ने मानो एकमात्र और अव्दितीय परिवर्तन किया जो सराहानीय है | १९ वी शताब्दी में भारतीय समाज व्यवस्था मनुस्मृति के दर्शनपर जाति आधारित थी | भारत मे वैदिक काल से चलती आयी वर्णव्यवस्था ने मनुष्य के जीने के अधिकार को नकारा था | जातीव्यवस्था मे जो वर्ण रचना थी उसमे चार वर्ण थे | जो इस प्रकार थे ,ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व, शुद्र, | ब्राह्मण वर्ग सबसे उपर और उच्च जाति के होने कारण उन्हे धर्म के नीति नियम और सभी मानव होने के अधिकार प्राप्त थे | समाज उनका स्थान पवित्र माना जाता था | उन्हे बुध्दिमान समझा जाता था | शुद्र निम्न जाति के होने कारण उन्हे मानव होने के सभी अधिकार से वंचित किया गया था| भारतीय दर्शन और धर्मनीति के अनुसार उपरोक्त सभी वर्ण की सेवा करना और निम्न स्तर के कार्य करना यही उनको स्वर्ग में जगह दे सकता है इस मानसिकता के शिकार और धर्म के ठेकेदार ने इस वर्ग को हजारों साल गुलाम बना रखा था| उनके मानव होने के अधिकार के साथ शिक्षा का अधिकार भी नकारा गया था| उन्हे मूर्ख, बुद्धिहीन

समझा गया था | इसी मानसिक बल की सहायता से उच्च वर्ण के लोगो ने १९ वी शताब्दी तक शूद्र वर्ग का शोषण किया | युगो-युगो तक जिस वर्णव्यवस्था ने मनुष्य को मानव अधिकार से वंचित रखा जिसमें बदलाव लाना चुनौती पूर्ण कार्य था | भारत मे विभिन्न शासकों ने राज किया परन्तु वर्ण व्यवस्था की स्थिति मे बदलाव नही हो पाया | इतनी मजबूत जड़ को निकालने का साहस किसी मे नही था| महाराष्ट्र में मराठेशाही का अस्त और अग्रेंज साम्राज्य का उदय भारतीय समाज मे बदलाव जरूर लायेंगा और इस वर्णव्यवस्था के गुलाम अब पुरी तरह मुक्त हो जायेंगे इस आशा के साथ दलित,वंचित समाज में से एक युगान्ताकारी यौध्दा ,आधुनिक शिक्षा का जनक, समाज परिवर्तन का अग्रदूत और समाज परिवर्तन के दिशा-दर्शक के अद्वित्तीय महापुरुष महात्मा ज्योतीराव फुले जो एक निम्न माली जाति के थे | १८१७ में पेशवाओं की सत्ता हटी और महाराष्ट्र अग्रेंजो का गुलाम हुआ| इस गुलामी से पहले भी बहुजन समाज गुलाम ही था| अछुत उच्च वर्णो के गुलाम थे| महिला पुरुष-प्रधान व्यवस्था की गुलाम थी | बंधुआ मजदूर अमीरों के गुलाम थे | बहुसंख्य जनता अंन्धविश्वास, रूढी, परम्परा की गुलाम थी | कुल मिलाकर गुलामी का दायरा बहुत बडा था और उस एक दायरे के भीतर और कई दायरे थे | राजकीय दासता के पहले यहा सामाजिक, धार्मिक और इनके साथ साए की तरह चलने वाली आर्थिक दासता का वर्षो से डेरा पडा हुआ था |

१६ वी शताब्दी मे अग्रेंज भारत आये | धीरे धीरे वह भारत के शासक बने | उन्होने भारत मे अनेक बदलाव लाये | सदियोसें चलती आयी अनेक सामाजिक प्रथाओं का विरोध कर उसमें बदलाव किया | लेकीन उन्होने देखा की भारत मे ब्राहमण होशियार, बुद्धीमान, विचारशील है | जो हमारे शासन को चलाने मे मदत कर बिनविरोध हमे सहायता कर सकता हैं | उन्हे शासन चलाने हेतू अच्छे कारकुन और अध्यापक की जरुरत थी | इसलिए उन्होने वर्ण व्यवस्था के विषय पर ध्यान नही दिया उन्हे पता था, इससे हमारा शासन करना मुश्किल हो जायेगा | ब्रिटिश नोकरशाही मे ब्राह्मणों को स्थान मिला उनकी प्रतिष्ठा बढती गयी | उनको खुश करने हेतु कुलकर्णी, देशमुख, वतनदारों को बक्षीस रूप मे खेती दान की जाती थी | उच्च वर्ग की संपत्ति और बढ़ ही रही थी | इस वर्णव्यवस्था की स्थिति मे अब और बदलाव आये | लगान वसूल करने का काम ब्राह्मण करते थे | खेतों मे काम करनेवाले शुद्र थे | वहा उनका शोषण होता था | इधर लगान भर-भर कर किसान बेहाल हुये थे | अग्रेंज कम दाम मे फसलों की खरेदी करते थे | किसान चारों तरफ से बेहाल था | जिसमे सबसे ज्यादा शुद्र थे | अब दो समय की रोटी तक मुश्किल हो चुकी थी |

१९ वी शताब्दी के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध्द में भारतीय राजनौतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि सभी क्षेत्र बडे उथल-पुथल के साक्षी रहे हैं | १९ वी शताब्दी में भारत में युगान्तरकारी परिवर्तनों का सूत्रपात हो चुका था| १६ वी शताब्दी मे आये अंग्रेजों नें अब पंजाब को छोडा तो सम्पूर्ण भारत मे

अपना वर्चस्व बना लिया था | भारत मे आझादी का आंदोलन शुरू हो चुका था | फ्रान्स के राज्यक्रांति के कारण यूरोप में एक नई विचारधारा का प्रारम्भ हो चुका था | इंग्लन्ड की औद्योगिक क्रांति के कारण भारत मे मशीनों का उपयोग बढा था, यातायात के साधनों में वृद्धि हुई थी | दूरसंचार, रेल, बैंक, आदि सुविधा से परस्पर संपर्क और व्यवहार बढे, विचारों के आदान-प्रदान को गति मिली | भारतीय लोग पढने लगे थे | अर्थात भारतीयों के विचारों में दासता के विरुद्ध संघर्ष करने का साहस निर्माण हो चुका था| ब्रिटिश शासन के आगमन तक भारतीय समाज को विभिन्न कुरीतियों ने जकड् रखा था | सतीप्रथा, कन्यावध जैसी भीषण एवं बाल विवाह जैसी घातक और अस्पृश्यता तथा जातिभेद जैसी हानिकारक कुरीतियों ने देश को पतन के गर्त में धकेल रखा था | यूरोप की नई विचारधारा एवं शिक्षा के कारण भारत के सामाजिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन होने शुरू हो गये थे | भारतीय बुध्दीजीवियों में भी नवीन चेतना का प्रादुर्भाव हुआ था | राजा राम मोहनराव, बाल तिलक, स्वामी विवेकानंद, महात्मा ज्योतिबा फुले आदि जैसे महान विभूतियों का नेतृत्व भारत को मिला जिससे भारतीयों ने देश में सर्वांगीण सुधार की ज्योति प्रज्वलित की | भारत में विद्यमान अंधविश्वास और अंन्धश्रध्दा के बंधन को शिथिल करने का अवसर अब मिलने की उम्मीद जगने लगी थी| पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का भारतीय सामाजिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव पडा |

भारत के महान विभूतियों में परिवर्तन हेतू प्रेरित, महाराष्ट्र की एक अव्दितीय विभूति, जो सामाजिक क्रांति के जनक थे, आधुनिक शिक्षा के अग्रदूत थे, क्रांतिकारी समाज परिवर्तन आंदोलन के मुल प्रवर्तक थे, भारतीय मानवतावादी संस्कृति के आद्य प्रवर्तक, भारतीय समाज के महान चरित नायक, स्त्री शिक्षा का उद्धारकर्ता, दलितों का उत्थान करनेवाला महानायक, आदि विशेषणों से विभूषित महात्मा ज्योतिराव गोविंदराव फुले | ज्योतिराव १९ वी शताब्दी के एक महान क्रांतिकारी पुरुष थे | महात्मा फुले समय से भी बहुत आगे थे | क्योंकि उनके निर्दिष्ट विचार एवं सम्पादित कार्य आज भी प्रासंगिक हैं | जन क्षोभ का भय रखे बिना सामाजिक सुधार का प्रारम्भ अपने घर से शुरू करनेवाले महात्मा फुले जैसा समाज सुधारक सदियों में एकाध ही होता है| जैसी कथनी वैसी करणी के अनुसार चलनेवाले लोग बहुत कम होते है| अपने ग्रंथ में उन्होनें हिंन्दू धर्म में विद्यमान विषमता पर कठोर प्रहार किये और समानता पर आधारित सत्यधर्म का समर्थन किया है | 1848 में उन्होंने अछूतों के लिए पहला स्कूल पुणे में खोला। यह भारत के तीन हजार साल के इतिहास में ऐसा पहला स्कूल था जो दलितों के लिए खोला गया था। 1948 में यह स्कूल खोल कर उन्होनें समाज के विपरीत वर्तन कर वर्षो से आयी परंपरा को मानो चूनौती दी थी|

महात्मा जोतिराव गोविंदराव फुले का जन्म 11 अप्रेल 1827 को पुणे में महाराष्ट्र की एक दलित माली जाति में हुआ। जोतिबा के पिता का नाम गोविन्दराव तथा माता का नाम चिमणाबाई

(मराठी मे बाई शब्द को हिन्दी के 'देवी' के अर्थ मे) था। एक साल की उम्र में ही जोतिबा फुले की माता का देहान्त हो गया। पिता गोविन्दराव जी ने आगे चल कर सुगणाबाई नामक विधवा जिसे वे अपनी मुहबोली बहन मानते थे उन्हें बच्चों की देखभाल के लिए रखा था | बच्चों को पढाना चहिए इस ललक में उन्होनें ज्योतिबा को पाठशाला में भेजा था मगर सवर्णों ने उन्हें स्कूल से वापिस बुलाने पर मजबूर कर दिया। अब जोतिबा अपने पिता के साथ माली का कार्य करने लगे। सन् 1840 में तेरह साल की छोटी सी उम्र में ही जोतिबा का विवाह नो वर्षीय सावित्रीबाई से हुआ। आगे जोतिबा का नाम स्काटिश मिशन नाम के स्कूल (1841-1847) में लिखा दिया गया। जहाँ पर उन्होंने थामस पेन की किताब 'राइट्स ऑफ मेन' एवं 'दी एज ऑफ रीजन' पढ़ी, जिसका उन पर काफी असर पड़ा। स्कूल के अपने एक ब्राह्मण मित्र की शादी में एक बार जोतिबा गये थे, तो उन्हें वहाँ पर अपमानित होना पड़ा था। बड़े होने पर उन्होंने इन रूढ़ियों के प्रतिकार का विचार पक्का किया। आधुनिक महाराष्ट्र में महात्मा फुले का कार्य एकमात्र और अव्दितीय स्वरूप का है | उन्होनें समानता पर आधारित महाराष्ट्र के ध्येय-सपनों की नींव ही डाली थी | अछूतों के लिए पाठशाला खोली सन (१८४८) , ब्राह्मण कन्याओं को शिक्षा देना (१८५१) , अपने स्वंय के घर मे बालहत्या प्रतिबंधक गृह खोलना (१८६३) , अपने घर के कूएँ से अछूतों को पानी भरने की अनुमति देना (१८६८), बहुजन समाज की जागृति के लिए सत्यशोधक समाज का गठन करना (१८७३), ये महान क्रांतिकारी कार्य साबित होने वाले कार्य उन्होनें फुले ने उस वक्त के समाज के ठकेदारों को नाराज कर दिया था। जोतिबा के पिता गोविन्द राव जी भी उस वक्त के सामंती समाज के बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। इस कारण उनके पिता पर काफी दबाव पड़ा तो उनके पिता ने उनसे आकर कहा कि या तो स्कूल बंद करो या घर छोड़ दो। तब जोतिबा फुले एवं उनकी पत्नि सावित्रीबाई के साथ सन् 1849 में घर छोड़ दिया। उस स्कूल में एक ब्राह्मण शिक्षक पढ़ाते थे। उनको भी दबाव में अपना घर छोड़ना पड़ा। सामाजिक बहिष्कार का जवाब महात्मा फुले ने 1851 में दो और स्कूल खोलकर दिया। सन् 1855 में उन्होंने पुणे में भारत की प्रथम रात्रि पाठशाला और 1852 में मराठी पुस्तकों के प्रथम पुस्तकालय की स्थापना। जोतिबा ने भारत का पहला लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोला। जिसमें पढ़ाने के लिए कोई भी तैयार नहीं हुआ। तो उनकी पत्नी सावित्री ने ही स्वयं यह जिम्मेदारी उठाकर उस लड़कियों के स्कूल मे पढ़ाना आरंभ किया। इस तरह सावीत्री घर से बाहर आकर पढ़ाने का काम करने वाली पहली शिक्षिका थीं। उन्हें तंग करने के लिए शुरू में उन पर गोबर और पत्थर फेंके जाते थे। पर वे पीछे नहीं हटी। जब 1868 में उनके पिताजी का देहान्त हुआ तो जोतिबा ने अपने परिवार के पीने के पानी वाले तालाब को अछूतों के लिए खोल दिया। मुम्बई सरकार के अभिलेखों में जोतिबा फुले द्वारा पुणे एवं उसके आस पास के क्षेत्रों में शुद्र बालकबालिकाओं के लिए कुल-18 स्कूल खोले

जाने का उल्लेख मिलता है। अपने समाज सुधारों के लिए पुणे महाविद्यालय के प्राचार्य ने अंग्रेज सरकार के निर्देश पर उन्हें पुरस्कृत किया और वे चर्चा में आए| इससे चिढ़कर कुछ अछूतों को ही पैसा देकर उनकी हत्या कराने की कोशिश की गई पर वे उनके शिष्य बन गए। सितम्बर १८७३ में इन्होने महाराष्ट्र में 'सत्य शोधक समाज' नामक संस्था का गठन किया। और इसी वर्ष उनकी पुस्तक 'गुलाम गिरी' का प्रकाशन हुआ।

महात्मा फुले एक समता मूलक और न्याय पर आधारित समाज की बात कर रहे थे इसलिए उन्होंने अपनी रचनाओं में किसानों और खेतिहर मजदूरों के लिए विस्तृत योजना का उल्लेख किया है। पशुपालन, खेती, सिंचाई व्यवस्था सबके बारे में उन्होंने विस्तार से लिखा है। गरीबों के बच्चों की शिक्षा पर उन्होंने बहुत ज़ोर दिया। उन्होंने आज के 150 साल पहले कृषि शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना की बात की। जानकार बताते हैं कि 1875 में पुणे और अहमदनगर जिलों का जो किसानों का आंदोलन था, वह महात्मा फुले की प्रेरणा से ही हुआ था। इस दौर के समाज सुधारकों में किसानों के बारे में विस्तार से सोच-विचार करने का रिवाज़ नहीं था लेकिन महात्मा फुले ने इस सबको अपने आंदोलन का हिस्सा बनाया। स्त्रियों के बारे में महात्मा फुले के विचार क्रांतिकारी थे। मनु की व्यवस्था में सभी वर्णों की औरतें शूद्र वाली श्रेणी में गिनी गयी थीं। लेकिन फुले ने स्त्री पुरुष को बराबर समझा। उन्होंने औरतों की आर्य भट्ट यानी ब्राह्मणवादी व्याख्या को ग़लत बताया। फुले ने विवाह प्रथा में बड़े सुधार की बात की। प्रचलित विवाह प्रथा के कर्मकांड में स्त्री को पुरुष के अधीन माना जाता था लेकिन महात्मा फुले का दर्शन हर स्तर पर गैरबराबरी का विरोध करता था।

आगे स्वामी दयानंद ने जब मुम्ब्ई में आर्य समाज की स्थापना की तो सनातनियों के विरोध को देखते हुए उन्हें ज्योतिबा की मदद लेनी पड़ी। जोतिबा ने शराब बंदी के लिए भी काम किया था। एक गर्भवती ब्राह्मण विधवा को आत्महत्या करने से रोक उन्होंने उसके बच्चे को गोद ले लिया। जिसका नाम यशवंत रखा गया। अपनी वसीयत ज्योतिबा ने यशवंत के नाम ही की। सन् 1890 में जोतिबा के दांए अंगों को लकवा मार गया। तब वे बाएं हाथ से ही सार्वजानिक सत्य धर्म नामक किताब लिखने में लग गये। 28 नवम्बर 1890 में उन्होंने संसार से विदाई ली। इसी साल उनकी मृत्यु के बाद यह किताब छपी। महात्मा जोतिबा फुले जी महान विचारक, समाज सेवी तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। महिलाओं, दलितों एवं शुद्रो के उत्थान के लिय इन्होने अनेक कार्य किए। समाज के सभी वर्गो को शिक्षा प्रदान करने के प्रबल समथर्क थे।

डॉ. अम्बेडकर तो महात्मा फुले के व्यक्तित्व-कृतित्व से अत्यधिक प्रभावित थे। वे महात्मा फुले को अपने सामाजिक आंदोलन की प्रेरणा का स्त्रोत मनाते थे। 28 अक्टूबर 1954 को पुरूदर स्टेडियम, मुम्बई में भाषण देते हुए उन्होंने महात्मा बुद्ध तथा कबीर के बाद महात्मा फुले को अपना

तीसरा गुरू माना है। डॉ. अम्बेडकर ने अपने भाषण में कहा (अर्थात् मेरे तृतीय गुरू ज्योतिबा फुले हैं। केवल उन्होंने ही मानवता का पाठ पढाया। प्रारम्भिक राजनीतिक आन्दोलन में हमने ज्योतिबा के पथ का अनुसरण किया, मेरा जीवन उनसे प्रभावित हुआ है।)

डॉ अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'शूद्र कौन थे?' को 10 अक्टूबर 1946 को महात्मा फुले को समर्पित करते हुए लिखा-जिन्होंने हिन्दु समाज की छोटी जातियों को, उच्च वर्णो के प्रति उनकी गुलामी की भावना के सम्बंध में जागृत किया और जिन्होने विदेशी शासन से मुक्ती पाने से भी सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना की यह कार्य अधिक महत्वपूर्ण है, इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, उस आधुनिक भारत के महान शूद्र महात्मा फुले के शैक्षणिक कार्य का अध्ययन कर वर्तमान निम्न वर्ग के विकास हेतू नये प्रतिमान के निर्माण हेतू इस शोध कार्य को पूरा करने का प्रयास जरूर किया गया है | सामाजिक व्यवस्था के विपरीत महात्मा फुले ने शिक्षा ही निम्न वर्ग और स्त्री वर्ग के उध्दार का केंद्रबिंदु है | इस बात को फुले महोदय ने बारीकी से जाना था इसलिये शिक्षा के माध्यम से इस समाज को नया विकल्प प्रतिमान दिया ताकि यह समाज अपना उध्दार कर सके | तत्कालीन समाज व्यवस्था के विपरीत फुले महोदय ने जो विकल्प रखा उसी विकल्प प्रतिमान का परिणाम महाराष्ट्र में स्त्री शिक्षा का प्रारम्भ कहा जा सकता है |

प्रस्तुत शोध में महात्मा फुले के शिक्षा विकल्प प्रतिमान के कारण हुये बदलाव को देखना चाहते है| महात्मा फुले का शिक्षा विकल्प प्रतिमान क्या था? तत्कालिन सामाजिक, आर्थिक, राजकीय स्थिति क्या थी ? क्या यह शिक्षा विकल्प प्रतिमान दलित, स्त्री,अछुत, पिडीत वर्ग का विकास कर सका है या उसमें क्या चूनौती रही थी आदि सभी प्रश्नों के उत्तर हेतू शोध कार्य को पुरा करने का प्रयास किया गया है | तत्कालिन सामाजिक,राजकीय,धार्मिक,आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर इस शोध द्वारा महात्मा फुले महोदय ने शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान किस प्रकार दिया जो आज भी शिक्षा और समाज के लिए महत्वपूर्ण क्यों है यह जानकर आज शिक्षा के क्षेत्र मे विभिन्न चूनौतियाँ है जिसमें वंचित वर्ग का विकास एक महत्वपूर्ण चूनौती है | इस वर्ग के विकास हेतू शोधकर्ती एक विकल्प प्रतिमान देना चाहती है |

1.2 समाज परिवर्तन के दिशा-निदेशक : ज्योतीराव फुले

आज दुनिया काफी आगे निकाल चुकी हैं | जिस देश ने नारी शिक्षा के अधिकार और स्वतंत्रता का विरोध किया था| इसी देश में आज नारीकों निशुल्क शिक्षा, स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं मे तीस फीसदी आरक्षण, महिलाओंकों समाज में समान दर्जा, धर्मसंस्थाओं में प्रवेश आदि जैसी सुविधा के कारण वह आत्मविश्वास के साथ राष्ट्रीय उन्नति की स्त्रोत में शामिल हो पा रही हैं|

महात्मा फुले १९ वी शताब्दी के समाज परिवर्तन के महानायक थे | उन्होनें विशिष्ट ध्येय के लिए अपना जीवन समर्पित किया | महात्मा फुले ने स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, जातीयता का निर्मूलन, किसान और कामगारों के जीवन में मुलभूत परिवर्तन लाने जैसे समाज सुधारों के लिए अपना पूर जीवन लगाया| चाहे तो वह किसी संस्था मे नौकरी कर एक अच्छा जीवन जी सकते थे पर उन्होने मिशनरी स्कूल के नौकरी से मिली आय को उनके समाज सुधार कार्य के लिए लगाया| उनके सुधार कार्य का सनातनीयों ने जमकर कर विरोध किया | उनको जान से मारने तक की कोशिश की परन्तु उन्होनें अपनी निष्ठाओं को नही छोडा| महात्मा फुले के साहित्य से उनके विचार और विचारों के दिशा में कार्य करना और ऐसा कार्य जो आज भी जीवित हैं, प्रेरणादायी है, जरुरी हैं, यह दृष्टि रखना महत्मा फुले को समझाने के लिए काफी है | इसीलिये महात्मा फुले समाज परिवर्तन के दिशा निदेशक कहे जाते है|

- शरद पवार, मुख्यमंत्री,महाराष्ट्र राज्य

1.3 आधुनिक महाराष्ट्र के निर्माता : महात्मा फुले

आधुनिक महाराष्ट्र के निर्माण के लिए जिन्होने अपने आचरण, विचारों और उच्चारों से शक्ति तथा प्रेरणा दी, उनमें महात्मा फुले का नाम सबसे पहले आएगा | सामाजिक समता, धार्मिक सहिष्णुता, आर्थिक न्याय, और शोषण मुक्ति के लिए ज्योतीराव ने जीवन के अन्तिम क्षण तक संघर्ष किया | उनके पुरोगामी विचारों को कृति का साथ मिला और कृति को कर्तव्य और मानव के प्रति आत्मीयता का साथ | आज सारे सामाजिक जीवन में एक तरह की शिथिलता छाई हुई हैं| ऐसे समय ज्योतीराव के विचारों की विरासत लेकर ही भविष्य का मार्ग निश्चित करना होगा और इसलिए परिवर्तन का अक्षय और अम्लान विचारधन फिर से समाज के सामने आना चहिए|

- प्रभाकर धारकर, मंत्री उच्च एवं तंत्र शिक्षा, महाराष्ट्र राज्य|

1.4 समाज - परिवर्तन के अग्रदूत : महात्मा फुले

महात्मा ज्योतीराव फुले आधुनिक महाराष्ट्र के एक महान समाजचिंतक थे | उन्होनें किसान, श्रमिक, बहुजन समाज, दलित और नारी पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई | रुढिवादी

विचारों पर आलोचना का चाबूक चलाया | विविध जातियों और पंथों के लोगो को भाईचारे की सीख दी | शिक्षा हर दृष्टि से सुधार का प्रवेशद्वार है, यह उनकी धारणा थी | इसी द्वार को शुद्रों, अतिशुद्रों तथा स्त्रीयों के लिए खुला कर दिया | दलित और शोषित वर्ग को उनके मानवीय हक दिलाने के लिए उन्होनें जीवन भर संघर्ष किया | वे सही मायने में समाज-परिवर्तन के अग्रदूत थे | मानवतावाद के उपासक थे | ज्योतिराव और उनकी पत्नी सावित्रीबाई का जीवन और कार्य हर भारतीय के लिए गौरवास्पद हैं | आधुनिक महाराष्ट्र की रचना में फुले पती-पत्नी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया | समाजक्रांति के संगठन के रूप में महाराष्ट्र और भारत के इतिहास में महात्मा फुले का स्थान अचल हैं |

- सदाशिवराव मंडलिक ,राज्य शिक्षा मन्त्री , महाराष्ट्र राज्य |

1.5 ज्योतिराव फुले के बारे में विभिन्न समाजचिंतक के विचार

1.5.1 स्वातंत्र्य वीर सावरकर :

" *ज्योतिबा एक आदर्श समाज क्रांतिकारक थे* |"

1.5.2 डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर :

"महात्मा फुले ने कोटि पिडीत, वंचित, अस्पृश्य, दलित समाज के लोगों का अपनी आत्म उन्नति और विकास का मार्ग (दिशा) दिखाई |महात्मा फुले को बुध्द और कबीर के बाद गुरुकों स्थान प्रदान किया |"

1.5.3 डॉ. बाबा आढाव :

"समग्र क्रांति इस शब्द की शुरुआत फुले ने कर मनुष्य के मन मे मनुष्य के विकास हेतु खडा किया | मनुष्य के बुध्दि के विकास मे जो दडपण था उसे ज्योतीराव नेखोजकर मनुष्य तैयार किये |"

1.6 शिक्षा :

शिक्षा को मानवी जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग कहा जाता है शिक्षा |से व्यक्ति के सामाजिकशिक्षा के बिना | चारित्रिक विकास होने में मदद मिलती है ,नैतिक ,आर्थिक ,सांस्कृतिक ,

व्यक्ति विकास की कल्पना आज हम कर ही नहीं सकतेजिसका ,इसलिए शिक्षा एक ऐसी क्रिया है , न राष्ट्रीय विकास एवं उत्पादनशीलता की दृष्टि से आज विश्व का प्रआयोजत्येक राष्ट्र कर रहा है | इसलिए | आर्थिक एवं राजनैतिक विकास में शिक्षा का अद्वितीय योगदान होता है ,क्योंकि सामाजिक राष्ट्रीय विकास एवं सामाजिक पुनर्निर्माण की गति में तीव्रता लाने के लिए ग्रामीण स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक शैक्षिक नियोजन और उसका निष्ठापूर्वक क्रियान्वयन एक अनिवार्य आवश्यकता समझी जाती है | शिक्षा का मानव सभ्यता के क्रमिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है शिक्षा के | आधार परही व्यक्तिराष्ट्र और ,समाज , अंत में विश्व का सर्वांगिण विकास निर्भर करता है यह मानव | की आकांक्षा एवं अपेक्षाओं को जगाकर उसे पूरा करने में सहायता भी प्रदान करती है मानव को | उसके अतित से परिचित करवा कर वर्तमान में जीवन जीने की कला सिखाती है तथा आनेवाले भविष्य का निर्माण करने की क्षमता भी प्रदान करती है ||

1.7 समस्या कथन :

" महात्मा ज्योतिबा फुले के शैक्षणिक दृष्टिकोण की सामाजिक भूमिका का समीक्षात्मक विश्लेषण "

("A Critical Analysis of the Social Role of Mahatma Jyotiba Phule's Educational Perspective")

1.8 पारिभाषिक शब्दावली

1.8.1 ज्योतिबा फुले :

" जोतिराव गोविंदराव फुले का जन्म 11 अप्रेल 1827 को पुणे में महाराष्ट्र के सातारा जिले के छोटेसे गाँव कटगुण मे, एक दलित माली जाति में हुआ । जोतिबा के पिता का नाम गोविन्द राव तथा माता का नाम चिमणाबाई था । ज्योतिबा एक आदर्श समाज क्रांतिकारक थे | महात्मा फुले ने कोटी पिडीत, वंचित, अस्पृश्य, दलित समाज के लोगों को अपनी आत्म-उन्नति और विकास के मार्ग

दिखाये और उनके जीवन को नयी दिशा दी | सभी मनुष्य समान है सबको सामन अधिकार दिलाने के लिए परम्परागत समाज व्यवस्था को बदलने या उसमे परिवर्तन कर एक नये समाज की स्थापना करने वाले महान क्रांतिकारी नेता, समाजचिंतक, समाजसेवी, आधुनिक भारत के अग्रदूत, शिक्षा के जनक महात्मा ज्योतीराव गोविंदराव फुले थे" |

1.8.2 महात्मा :

"महात्मा शब्द के विभिन्न अर्थ बताये गये है, जिसके विचार मानवतावादी हो, जिसने सामाजिक समता तथा सामाजिक न्याय के लिए अपना जीवन समर्पित किया हो, वो जिसकी आत्मा या हृदय उच्च विचारों से परिपूर्ण हो, जिसका हृदय करुणा से औत-प्रौत हो, और जिसका विचार-आचार, स्वभाव, आचरण उच्च हो उसे महात्मा कहते हैं |"

1.8.3 सामाजिक शिक्षा :

"सामाजिक शिक्षा का तात्पर्य प्रौढ शिक्षा के समान साक्षरता प्रदान करने मात्र से नही है | साक्षरता तो एकमात्र आगामी शिक्षा को प्राप्त करने का साधन जिसे उपलब्ध कराकर शिक्षित किया जा सकता है | हस्ताक्षर करना शिक्षा नही है | देश में विभिन्न सामाजिक रूढी, परम्परा, बुराईयाँ, पिछडापण, अंधविश्वास, संकीर्णता, अवैज्ञानिकता, निर्धनता आदि को समूल नष्ट कर सामाजिक पुनरुत्थान कर आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास, वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति आदि विकास सामाजिक शिक्षा के अंग है |

1.8.4 शिक्षा :

"Education is the reconstruction of experience".

- John dewey

1.8.5 क्रो एवं को. : (१९५४) :

"शिक्षा व्यक्तिकरण एवं सामाजीकरण की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति की व्यक्तिगत उन्नति तथा समाजपयोगिता को बढावा देती है |"

1.8.6 सामाजिक भूमिका :

"व्यक्ति समाजशील प्राणी है | वह समाज मे रहता है | समाज उसके आवश्यकताओं को पूर्ण करता हैं पर कुछ समस्या गम्भीर होती है जिसको बदलना कठीन होता है | ऐसे बदलाव मे कुछ व्यक्ति अपना योगदान देते है जिससे चलती आयी परम्परा का विरोध किया जाता है | समाज मे क्रांति लायी जाती है | सामाजिक समस्या का हल करना जो अपना कर्तव्य मानते है और उस कार्य के प्रति समर्पित होकार स्वप्रेरणा से नेतृत्व करता है | सामाजिक कार्यो की सामाजिक जाण या सामाजिक कर्तव्य समझने वाले व्यक्ति के उत्तरदायित्व का भाव सामाजिक भूमिका से है |"

1.9 शोध का लक्ष्य :

शोध कार्य की दिशा तत्कालिन समाज व्यवस्था मे महात्मा फुले के सामाजिक शिक्षा के भूमिका का अध्ययन करना और वर्तमान मे उसकी प्रासंगिकता और चुनौती का विश्लेषण कर वर्तमान पिडीत, वंचित, दलित वर्ग के लिए नये सामाजिक शिक्षा के विकल्प के साथ वंचित वर्ग के लिए एक ऐसा प्रतिमान देना जो विकल्प इस समाज के विकास मे भूमिका अदा करे | यह शोध का लक्ष्य है |

1.10 शोध के उदेश्य :

१. महात्मा फुले के जीवन काल का अध्ययन करना |

२. महात्मा फुले के काल का उनके कार्य पर रहे प्रभावों का अध्ययन करना |(कथनी और करनी)

३. महात्मा फुले के काल की सामाजिक, आर्थिक, राजकीय स्थिति का अध्ययन करना |

४. महात्मा फुले के सामाजिक शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना |

५. वंचित, पिडीत, पिछडे समाज की आवश्यकताओं के संदर्भ में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के विकल्प प्रतिमानों का समीक्षात्मक विश्लेषण करना |

६. वर्तमान में शिक्षा की चुनौतियाँ और प्रासंगिकता का अध्ययन करके वंचित, पिडित, पिछडे समाज के शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन हेतु नये प्रतिमान के निर्माण हेतु अध्ययन करना |

1.11 शोध के प्रश्न :

१. क्या था महात्मा फुले का जीवन काल
२. क्या महात्मा फुले के जीवन काल का प्रभाव उनके कार्य पर था ?
३. महात्मा फुले के समय सामाजिक, आर्थिक, राजकीय स्थिती कैसी थी ?
४. महात्मा फुले के सामाजिक क्रांति में सामाजिक शिक्षा का विकल्प प्रतिमान क्या था
५. महात्मा फुले के सामाजिक क्रांति मे सामाजिक शिक्षा का कार्य क्या था ?

६. वंचित, पिडित, दलित और स्त्री वर्ग के विकास मे वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की क्या भूमिका हैं?

७. वर्तमान में शिक्षा की क्या चूनौतीयाँ है और शिक्षा व्यवस्था के सुविधाओं का परिणाम क्या है?

८. क्या वंचीत, पिडित, दलित और स्त्री वर्ग के शैक्षिक विकास के लिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मे परिवर्तन की आवश्यकता है ?

९. क्या वंचित, पिडित, दलित वर्ग के शैक्षिक गुणात्मक विकास के लिए वर्तमान मे नये प्रतिमान की आवश्यकता है ?

1.12 शोध का महत्व :

भारत देश में बरसों से धार्मिक, आध्यात्मिक, तत्व पर समाज की रचना निर्भर रही है | वैदिक काल से हमारे देश मे समाजरचना वर्णव्यवस्था पर आधारित रही जिसके चार वर्ण थे | इसी वर्णव्यवस्था के कारण निम्न वर्ग को हमेशा अपने मानव होने के अधिकार से वंचित रहना पडा | जिसकी निंदा प्रत्येक काल मे हुई है पर उसमें परिवर्तन लाना एक चूनौती पूर्ण कार्य था | समाज मे बरसों से फैल चुकी मानसिक बिमारी का इलाज करना कठीन कार्य था | तत्कालीन समाज रचना ने शुद्र-अतिशूद्र को ज्ञानहीन, बुध्दिहीन बना दिया था | महात्मा फुले ने देखा की समाज मे विद्यमान सामाजिक विषमता के कारण देश की सामाजिक उन्नति रुकी हुई है | देश अज्ञानता की खाई में गर्क हो गया है लेकिन इस परम्परा को चूनौती देना मतलब हिंसात्मक स्थिति पैदा करना था | इस सामाजिक विषमता को मिटाना है तो पहले निम्न वर्ग और स्त्री वर्ग को शिक्षित किया जाये ताकि इस वर्ग को अपने अधिकार और अस्तिव की जाणीव महसूस हो जायेगी जिससे वे अपने अधिकार के लिए स्वयं लड सकेंगे | महात्मा फुले जानते थे कि इस वर्ग के विकास शिक्षा का केंद्रबिंदु है यही शिक्षा इनका विकास कर सकती है इसलिये उन्होनें तत्कालीन समाज के विकास हेतु एक विकल्प प्रतिमान रखा जो इस वर्ग का सही तरीकें से विकास कर सके |

इस शोध कार्य व्दारा शोधकर्ती यह जानना चाहती है कि, फुले महोदय ने ऐसा कौनसा विकल्प प्रतिमान उस समाज को दिया? वह प्रतिमान क्या था? कैसा था? क्यो जरुरी था? क्या उस समय प्रभावी रहा? और वर्तमान शिक्षा की इस समाज के विकास हेतु क्या भूमिका हैं? क्या प्रयास हो रहे है? क्या चुनौती है? इस समाज के सर्वांगीण विकास मे किस हद तक अपनी भूमिका निभा रहा है? आदि सभी बातों का अध्ययन करके वर्तमान मे इस समाज के विकास हेतु एक नये प्रतिमान का निर्माण करना इस शोध कार्य की विशेषता है | इसके लिए तत्कालीन समय की सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, पृष्ठभूमि का अध्ययन कर महात्मा फुले के जीवन काल और कार्य के प्रभाव के साथ उनका

सामाजिक शिक्षा में जो योगदान रहा उसका भी अध्ययन करना इस शोध कार्य के महत्व को बढाती है | नये प्रतिमान का निर्माण इस शोध कार्य के लिए अधिक महत्वपूर्ण है|

1.13 शोध का औचित्य :

प्रस्तुत शोध कार्य का औचित्य यह है कि भारत मे बरसों से चलती आयी वर्णव्यवस्था के कारण निम्न वर्ग के अधिकार को नकारा गया था इस अधिकार को दिलाने के लिए शिक्षा देनी जरुरी था क्योंकि शिक्षा ही ऐसा माध्यम था जो उनको अपने अस्तिव के होने का एहसास दिला सकती थी | इस बात को फुले महोदय जानते थे और उन्होनें उसी शिक्षा के सहायता से निम्न और स्त्री वर्ग के शिक्षा के लिए एक विकल्प प्रतिमान दिया जो सामाजिक शिक्षा का एक अच्छा उदाहरण था | इस शोध कार्य व्दारा तत्कालीन सामाजिक स्थिति और फुले महोदय के सामाजिक कार्य मे उनके शिक्षा प्रतिमान का कार्य इस अध्ययन व्दारा करना और वर्तमान के शिक्षा व्यवस्था की निम्न वर्ग के विकास में विद्यमान भूमिका का अध्ययन और उसमे बदलाव की आवश्यकता को समझना शोध का औचित्य हैं |

5.2 शोध के निष्कर्ष और मुल्यांकन:

5.2.1 प्रस्तावना :

महात्मा फुले १९ वी शताब्दी के समाज परिवर्तन के महानायक थे | उन्होनें विशिष्ट ध्येय के लिए अपना जीवन समर्पित किया | कार्य और विचार से ज्योतीराव एक महान व्यक्ति थे | वे चुम्बकीय व्यक्तिव के धनी थे | महात्मा फुले ने स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, जातीयता का निर्मूलन, किसान और कामगारों के जीवन में मुलभूत परिवर्तन लाने जैसे समाज सुधारों के लिए अपना पूर जीवन लगाया | चाहे तो वह किसी संस्था मे नौकरी कर एक अच्छा जीवन जी सकते थे पर उन्होने मिशनरी स्कूल के नौकरी से मिली आय को उनके समाज सुधार कार्य के लिए लगाया| उनके सुधार कार्य का सनातनीयों ने जमकर कर विरोध किया | उनको जान से मारने तक की कोशिश की परन्तु उन्होनें अपनी निष्ठाओं को नही छोडा | महात्मा फुले के साहित्य से उनके विचार और विचारों के दिशा में कार्य करना और ऐसा कार्य जो आज भी जीवित हैं, प्रेरणादायी है, जरुरी हैं, यह दृष्टि रखना महत्मा फुले को समझने के लिए काफी है | इसीलिए महात्मा फुले समाज परिवर्तन के दिशा निदेशक कहे जाते है|

आधुनिक महाराष्ट्र के निर्माण के लिए उन्होने अपने आचरण, विचारों और उच्चारों से शक्ति तथा प्रेरणा दी | सामाजिक समता, धार्मिक सहिष्णुता, आर्थिक न्याय, और शोषण मुक्ति के लिए ज्योतीराव ने जीवन के अन्त तक संघर्ष किया| उनके पुरोगामी विचारों को कृति का साथ मिला और कृति को कर्तव्य और मानव के प्रति आत्मीयता का साथ | आज सारे सामाजिक जीवन में एक तरह की शिथिलता छाई हुई हैं | ऐसे समय ज्योतीराव के विचारों की विरासत लेकर ही भविष्य का मार्ग निश्चित करना होगा और इसलिए परिवर्तन का अक्षय और अम्लान विचारधन फिर से समाज के सामने आना चहिए|

महात्मा ज्योतीराव फुले आधुनिक महाराष्ट्र के एक महान समाजचिंतक थे | उन्होनें किसान, श्रमिक, बहुजन समाज, दलित और नारी पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई | रुढिवादी विचारों पर आलोचना का चाबूक चलाया | विविध जातियों और पंथों के लोगो को भाईचारे की सीख दी | शिक्षा हर दृष्टि से सुधार का प्रवेशद्वार है, यह उनकी धारणा थी | इसी द्वार को शुद्रों, अतिशुद्रों तथा स्त्रीयों के लिए खुला कर दिया | दलित और शोषित वर्ग को उनके मानवीय हक दिलाने के लिए उन्होनें जीवन भर संघर्ष किया | वे सही मायने में समाज-परिवर्तन के अग्रदूत थे | मानवतावाद के उपासक थे | ज्योतिराव और उनकी पत्नी सावित्रीबाई का जीवन और कार्य हर भारतीय के लिए गौरवास्पद हैं | आधुनिक महाराष्ट्र की रचना में फुले पती-पत्नी ने महत्वपूर्ण योगदान

दिया | समाजक्रांति के संगठन के रूप में महाराष्ट्र और भारत के इतिहास में महात्मा फुले का स्थान अचल हैं | महात्मा फुले सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे | अपने जीवन मे उन्होनें विचार और कर्म को महत्व दिया था | बचपन से सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, भेदभाव को अथवा जातीयता के कारण उच्च वर्ग ने निम्न वर्ग के साथ जो बर्ताव किया था, उसे ज्योतिराव ने करीब से देखा था, इसलिए सामाजिक क्रांति की मशाल अपने २५ वर्ष की आयु में लेकर जीवन के अन्त तक समाज परिवर्तन के लिए जुझते रहे और आधुनिक समाज का निर्माण करने में महत्वपूर्ण योगदान देते रहे | एक युवा ज्योती शोषित, पिडीत, समाज को अधन्कार से प्रकाश की ओर ले जाना चाहता था | सामाजिक मानसिकता के कारण उनकी पढाई पुरी नही हो सकी | तत्कालिन सामाजिक नवजागरण के प्रभाव और क्रांति ने उन्हे समाज परिवर्तन की प्रेरणा दी | तत्कालिन इसाई मिशनरी का मानवतावाद, थॉमस पेन का मानव अधिकार, धाई माँ सगुणाबाई के मानव धर्म के संस्कार और इसाई पादारीयों के व्यक्तित्त्व और कार्य प्रणाली का प्रत्यक्ष प्रभाव आदि सभी कारण उनके जीवन मे सामाजिक कार्य की मानो नींव रही | मित्रों के साथ बचपन मे खेल-कुद के आयु में उन्होने विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन किया | भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजकीय पृष्ठभूमी का अध्ययन किया | भारतीय समाज में प्रचलित प्रथा, परम्परा, रीति-रिवाज जो इस समाज के उत्थान में मुख्य समस्या थी, जिसके कारण निम्न जाति, स्त्री जाति अपने मानव होने के अधिकार से भी वंचित थे इस विडम्बना का विरोध कर समाज में नव परिवर्तन का ध्वज लगाकर सम्पूर्ण मानव जाति को मानव होने के भाव से परिचित कराने वाले ज्योतिराव सच में महान क्रांतिकारी साबित हुए|

5.2.2 जीवन काल :

महात्मा जोतिराव गोविंदराव फुले का जन्म 11 अप्रेल 1827 को पुणे में महाराष्ट्र की एक दलित माली जाति में हुआ। जोतिबा के पिता का नाम गोविन्दराव तथा माता का नाम चिमणाबाई था । एक साल की उम्र में ही जोतिबा फुले की माता का देहान्त हो गया। पिता गोविन्दरावजी ने आगे चल कर सुगणाबाई नामक विधवा जिसे वे अपनी मुहबोली बहन मानते थे उन्हें बच्चों की देखभाल के लिए रखा परन्तु दूसरी शादी का विचार उन्होनें नही किया | ज्योतिबा पिता के साथ माली का कार्य करने लगे। सन् 1840 में तेरह साल की छोटी सी उम्र में ही जोतिबा का विवाह नो वर्षीय सावित्रीबाई (1831-1897) से हुआ। आगे जोतिबा का नाम स्कॉटिश मिशन नाम के स्कूल (1841-1847) में लिखा दिया गया। जहाँ पर उन्होंने थॉमस पेन की किताब 'राइट्स ऑफ मेन' एवं 'दी एज ऑफ रीजन' पढ़ी, जिसका उन पर काफी असर पड़ा | आधुनिक महाराष्ट्र में महात्मा फुले का कार्य एकमात्र और अव्दितीय स्वरूप का है |

5.2.3 तत्कालिन सामाजिक,आर्थिक, राजकीय स्थिति :

तत्कालिन सामाजिक और राजनैतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए महाराष्ट्र की मराठा शक्ति और अग्रेंज शासन का महत्व अधिक है | जागीर मिलने के बाद शिवाजी ने विकेंदित मराठा शक्ति को एकीकृत किया और मुगल साम्राज्य मुस्लिम रियासत बीजापूर से संघर्ष करके मराठा राज्य स्थापन किया | शिवाजी के शासनकाल मे सामान्य जनता सुखी संपन्न थी| शिवाजी के मृत्यू के बाद पेशवाई शासन मे समाज में पुरी तरह भष्टाचार व्याप्त हो चुका| निरन्तर षडयंत्रो के तहत होने वाले युध्द और विलासितापूर्ण जीवन के लिए पेशवा दरबार सदैव धन की मांग के कारण लोग सरकारी भूमि तक को पेशवा और उसके चाटुकार मराठा सरदार के पास अपनी भूमि गिरवी रख देते थे| महाराष्ट्र में पेशवा शासनकाल में खोती-पध्दती का उदय हो गया था | खोत शुद्रों को जमीन जोतने-बोने के लिए देता था और फसल का तीन-चौथाई अनाज जबरन ले जाता था | इतना ही नही शुद्र किसानों की बहुओ को शादी के बाद पहली रात इसी खोत के बंगले पर गुजारने के लिए मजबूर करते थे| इस अमानवीय खोती प्रथा का ज्योतीराव ने विरोध किया | सदियों तक गाँवों की सामाजिक और बौद्धिक स्थिति अंधाविश्वासपूर्ण ,संकुचित और रूढीवादी बनी हुई थी| धर्मगुरू और पाटील,कुलकर्णी,देशमुख जैसे राजा के प्रतिनिधी समाज जीवन पर निरन्तर अधिकार जताते रहे | यह सामाजिक नियम और मान्यतायें पत्थर पर खींची गई लकीर की भान्ति अपरिवर्तनीय थी | तत्कालिन समाज जातियों और उपजातीयों में बटाँ हुआ था जिसके कारण सभी एक-दूसरे से इर्ष्या, व्देष और उच्च-नीच की नजर से देखते थे | समाज को इस स्थिति तक पहुँचाने का कार्य इन धूर्त पाखंडी बदमाश चतुर ब्राह्मणों ने किया था | कुल मिलाकर देखे तो १९ वी सदी में महाराष्ट्र की सामान्य जनता, शुद्र,किसान की स्थिति अच्छी नही थी | ब्रिटिश शासन स्थापित होने के समय तक भारतीय समाज की दशा अत्यन्त शोचनीय रही | सतीप्रथा, कन्यावध, बालविवाह,अस्पृश्यता तथा जातिभेद जैसी भीषण और हानिप्रद कुरीतीयों का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव रहा है | इस सभी स्थिति का मुख्य कारण अज्ञानता और शिक्षा का अभाव कह सकते है |१९ वी सदी मे युगान्तरकारी परिवर्तन का सूत्रपात हुआ लेकीन यह तब सम्भव हुआ जब भारतीयों ने ज्ञान और प्रकाश के लिए पश्चिम की और देखा | पाश्चात्य शिक्षा और विचारधारा से प्रभावित भारतीय समाज सुधारकों ने इसमें अपना जीवन त्याग दिया|

समानता पर आधारित महाराष्ट्र के ध्येय-सपनों की नींव महात्मा फुले ने ही डाली थी | अछूतों के लिए पाठशाला खोली सन (१८४८) ब्राह्मण कन्याओं को शिक्षा देना (१८५१) , अपने स्वंय के घर मे बालहत्या प्रतिबंधक गृह खोलना (१८६३) , अपने घर के कूएँ से अछूतों को पानी भरने की अनुमति देना (१८६८), बहुजन समाज की जागृती के लिए सत्यशोधक समाज का गठन

करना (१८७३), ये महान क्रांतिकारी कार्य साबित होने वाले कार्य फुले ने किये जिसके कारण उस वक्त के समाज के ठकेदारों को नाराज कर दिया था। जोतिबा के पिता गोविन्द राव जी भी उस वक्त के सामंती समाज के बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। इस कारण उनके पिता पर काफी दबाव पड़ा तो उनके पिता ने उनसे आकर कहा कि या तो स्कूल बंद करो या घर छोड़ दो। तब जोतिबा फुले एवं उनकी पत्नि ने सन् 1849 में घर छोड़ दिया। उस स्कूल में एक ब्राह्मण शिक्षक पढ़ाते थे। उनको भी दबाव में अपना घर छोड़ना पड़ा। सामाजिक बहिष्कार का जवाब महात्मा फुले ने 1851 में दो और स्कूल खोलकर दिया। सन् 1855 में उन्होंने पुणे में भारत की प्रथम रात्रि पाठशाला और 1852 में मराठी पुस्तकों के प्रथम पुस्तकालय की स्थापना। जोतिबा ने भारत का प्रथम लड़कियोंका विद्यालय खोला। जिसमें पढ़ाने के लिए कोई भी तैयार नहीं हुआ। तो उनकी पत्नी सावित्री ने ही स्वयं यह जिम्मेदारी उठाकर उस लड़कियों के स्कूल मे पढ़ाना आरंभ किया। इस तरह सावित्री घर से बाहर आकर पढ़ाने का काम करने वाली पहली शिक्षिका थीं। उन्हें तंग करने के लिए शुरू में उन पर गोबर और पत्थर फेंके जाते थे। पर वे पीछे नहीं हटी। जब 1868 में उनके पिताजी का देहान्त हुआ तो जोतिबा ने अपने परिवार के पीने के पानी वाले तालाब को अछूतों के लिए खोल दिया। मुम्बई सरकार के अभिलेखों में जोतिबा फुले द्वारा पुणे एवं उसके आस पास के क्षेत्रों में शुद्र बालक- बालिकाओं के लिए कुल 18 स्कूल खोले जाने का उल्लेख मिलता है। उनके समाज सुधार कार्य के लिए पुणे महाविद्यालय के प्राचार्य ने अंग्रेज सरकार के निर्देश पर उन्हें पुरस्कृत किया और वे चर्चा में आए। इससे चिढ़कर कुछ अछूतों को ही पैसा देकर उनकी हत्या कराने की कोशिश की गई पर वे उनके शिष्य बन गए। सितम्बर १८७३ में इन्होने महाराष्ट्र में 'सत्य शोधक समाज' नामक संस्था का गठन किया।

महात्मा फुले एक समता मूलक और न्याय पर आधारित समाज की बात कर रहे थे इसलिए उन्होंने अपनी रचनाओं में किसानों और खेतिहर मजदूरों के लिए विस्तृत योजना का उल्लेख किया है। पशुपालन, खेती, सिंचाई व्यवस्था सबके बारे में उन्होंने विस्तार से लिखा है। गरीबों के बच्चों की शिक्षा पर उन्होंने बहुत ज़ोर दिया। उन्होंने आज के 150 साल पहले कृषि शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना की बात की। स्त्रियों के बारे में महात्मा फुले के विचार क्रांतिकारी थे। मनु की व्यवस्था में सभी वर्णों की औरतें शूद्र वाली श्रेणी में गिनी गयी थी। लेकिन फुले ने स्त्री पुरुष को बराबर समझा। उन्होंने औरतों की आर्य भट्ट यानी ब्राह्मणवादी व्याख्या को ग़लत बताया। फुले ने विवाह प्रथा में बड़े सुधार की बात की। प्रचलित विवाह प्रथा के कर्मकांड में स्त्री को पुरुष के अधीन माना जाता था लेकिन महात्मा फुले का दर्शन हर स्तर पर गैरबराबरी का विरोध करता था।

एक गर्भवती ब्राह्मण विधवा को आत्महत्या करने से रोक उन्होंने उसके बच्चे को गोद ले लिया। जिसका नाम यशवंत रखा गया। अपनी वसीयत जोतिबा ने यशवंत के नाम ही की थी । सन् 1890 में जोतिबा के दांए अंगों को लकवा मार गया। तब वे बाएं हाथ से ही सार्वजानिक सत्य धर्म नामक किताब लिखने में लगे हुए थे। 28 नवम्बर 1890 में उन्होंने संसार से विदाई ली।

5.2.4 तत्कालिन ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि :

भारत में अंग्रेजों से पहले ग्राम संस्था, जातीसंस्था, और परिवार का प्रचलन यही गाँव के जीवन की आधारशीला थी | लेकीन अंग्रेजों के शासन का परिणाम इन तीनों पर हुआ और कूछ ही समय बाद ये संस्था लुप्त हो गई| व्यक्ति ग्रामसंस्था से केवल वर्ण और परिवार की संस्थाओं के माध्यम से ही संपर्क बनाए रखते थे | राजसंस्था से ग्रामसंस्थाओं के मार्फत ही व्यक्ति का जीवन परंपराओं, अंधाविश्वासों से जकडा हुआ था | मोक्ष की कल्पना व्यक्तिगत स्वरूप की थी| ब्राह्मणों का कर्म था पुरोहिती | उनके पास जमीन बहुत कम थी | गाँव की खेती योग्य जमीन के मालिक अधिकतर मराठे थे | दलित जाति के लोगों के पास जमीन होती भी थी पर बहुत कम | कुलकर्णी के पद भी वंशानुक्रम से प्राप्त होते थे | चौकीदारी का काम उन महार, मांग, दलितों को सौंपा जाता था जिनके पूर्वजों ने भी यह कार्य किया था | दलित शुद्र वर्ग के लोग खेती-मजदुरी करके, दस्तकारी करके भी अपने परिवार को भरपेट भोजन, तन ढ़कने को सही ढ़ग के कपडे तथा रहने को दो हाथ जगह व छत भी नही जूटा पाते थे | उनका जीवन गुलामों से भी बदतर हो गया था | वे अपनी मुलभूत जरुरतों को पेशवाई स्वरक्षण प्राप्त ब्राह्मणो, साहुकारो से कर्ज लेकर पुरा करते थे और सूद से मुक्त नहीहो पाते थे | भ्रष्टाचार समाज में पुरी तरह व्याप्त हो चुका था|

5.2.5 सामाजिक शिक्षा :

ज्योतीराव ने आजीवन शुद-अतिशूद्र के अधिकारों के लिए संघर्ष किया, वह केवल किसी वर्ग विशेष के लिए नही था बल्की सामाजिक तथा आर्थिक समानता पर आधारित शोषण-रहित समाज बनाने के लिए था | आज जो राजनैतिक दल सामाजिक समानता की बात करते हें, परन्तु उनका उनका प्रयास केवल राजसत्ता हथियाना है पर फुले की सामाजिक क्रांति समाज मे सुधार करना थी और यह आज भी प्रांसंगिक है| वर्तमान सन्दर्भ में वंचित ,दलित और स्त्री शिक्षा की नींव अगर किसी ने रखी है तो ज्योतिबा फुले का एक सामाजिक शिक्षा का प्रतिमान सामने आता है | तत्कालिन समाज मे स्त्री और शूद्र को मानव होने के अधिकार से नकारा था | ज्योतीराव ने आजीवन इनके अधिकारों के लिए जो संघर्ष किया वह केवल किसी वर्ग विशेष के लिए नही था बल्कि सामाजिक तथा आर्थिक समानता पर आधारित शोषण रहित समाज बनाने के लिए था | आज विभिन्न पक्ष के

राजनेता एवं सभी राजनैतिक दल सामाजिक समानता की बात करते है पर उनका प्रयास सत्ता के लिए है | पर जिन दलित वर्गों को शिक्षित बनाने के लिए ज्योतीराव आजीवन झगडते रहे , वही शिक्षित होकार उनको पराजित कर रहे हैं | ज्योतिराव ने हंटर आयोग को प्रस्तुत किये गये निवेदन में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, नारी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया | अध्यापक प्रशिक्षित हो और वे किसान वर्ग से हो, उनके वेतन अच्छे हो आदि बाते आज भी प्रासंगिक है |आज अधिकांश अध्यापक बहुजन समाज से है उनके वेतन भी अच्छे है | उनको सेवा-निवृत्ति पर पेन्शन,ग्रेच्युटी आदि सुविधा उपलब्ध कराई गई है | गाँव-गाँव मे सरकारी प्राथमिक स्कूल खोली गई है और उसमे प्रशिक्षित अध्यापाकों व्दारा शिक्षण-कार्य की व्यवस्था की जा रही है | परन्तु शिक्षा के स्तर में संख्यात्मक वृद्धि हुई है, आज गुणात्मक विकास की जरूरत है |अध्यापक का स्तर गिर गया है| सरकारी स्कूल मे मिल रही शिक्षा का स्तर निम्न स्तर का हो चुका है| बेरोजगारी की समस्या तो अधिक तीव्र होते जा रही है | उच्च शिक्षा मे दलित,पिडीत,वंचित वर्ग की स्थिति और भी चिंताजनक है | आज गिने चुने संस्थान मे ही तकनीकी शिक्षा मिल पा रही है उसमे शिक्षित हो रहे छात्र संख्या कुल अनुपात से बहुत ही कम है| उसमें प्रवेश पाने के लिए अनुदान राशी अधिक होने कारण उसमें सामान्य जनता प्रवेशित नही हो पा रही है | धनवानों के पुत्र कम अंक पाकर भी इन संस्थानों मे प्रवेश पा लेते है | निर्धन छात्र इस शिक्षा से वंचित रह जाते है | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने कूछ ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए की जिससे वंचित समाज के सभी वर्गों के लोगों को समान रूप से तकनीकी शिक्षा का अवसर मिलना चहिए |

तत्कालीन शिक्षा-व्यवस्था पर अपने प्रस्तुत विचार में ज्योतीराव ने कहा था की , वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल लिपिक और अध्यापक बनाने की फैक्टी है | आज भी डेढ शताब्दी बीत जाने पर भी शिक्षा के इस रूप में किसी भी तरह का परिवर्तन नही आया है | ज्योतीराव ने कनिष्ठ वर्ग की जातियों में शिक्षा प्रसार की ओर अधिक ध्यान दिया था | उन्होने सरकार को सुझाव भी दिया था की, दलित-शोषित को विशेष सुविधा दी जाये और रियायते दी जाये| आज उनको स्कूल,महाविद्यालयों मे शुल्क में काफी छुट मिल जाती है | निशुल्क शिक्षा मिल रही है| अधिक विकास के लिए आज भी उसमें बदलाव जरुरी हैं |

ज्योतिराव अपने समय से बहुत आगे थे | इसका पता इसी बात से चलता है की, उनके उस समय के सुझाव और विचार आज भी प्रासंगिक है| वे १९ वी सदि के महान सुधारक, शिक्षा के जनक थे इस बात में किसी तरह की शंका हो ही नही सकती | उनका पुरा जीवन धर्मभेद, वर्णभेद और

लिंगभेद के खिलाफ एक महान विद्रोह था| सत्य की खोज उनके जीवन का लक्ष्य था | उनके विचार और आचार में किसी भी प्रकार का अन्तर नही था |

महात्मा फुले सही अर्थ मे एक युगपुरुष थे| बचपन से ही इस गुलामी का क्या कारण है इस बात से चिंतित फुले महोदय ने गुलामी के कई कारण हो सकते पर विद्या का अभाव मुख्य कारण है और अविद्या ही कई सामाजिक रोगों का मुख्य कारण है यह बताकर और उसी दिशा मे उन्होनें अपने कार्य को निरन्तर दिशा देकर पूर्ण किया| फुले महोदय परम्पराभंजक थे| कर्मकांड पर उन्होनें आघात किया | वे बुद्धिवादी थे| धर्मग्रंथ का निर्माण ईश्वर ने नही किया इस बात पर उनका अतूट विश्वास था | स्वर्ग और नरक की कल्पना उन्हे मंजूर नही थी | जन्म से कोई नीच-उच्च नही हो सकता इस बात का खंडन किया | ईश्वर को निर्भिक कहते हुए सारे मानव समान है इस सिद्धांत पर वे अटल रहे| इहवादी जीवन पर बल देते हुए उन्होनें अपने कार्य को अधिक मजबूत बनाया|

वर्तमान में देश की शिक्षा पर दृष्टि डालें तो हम पाते है की इस दिशा में जितने प्रयास किये जा रहे है उस कार्य में उतनी सफलता नही मिल रही है खासतौर पर ग्रामीण महिलाओं के शिक्षा विकास मे कोई प्रगति नही दिखाई देती है | हमारी सरकार शिक्षा पर प्रतिवर्ष करोडों रुपये खर्च कर रही है फिर भी देश की अधिकांश जनता आज भी अशिक्षित है ,इसका मुल कारण हमारे देश के ग्रामीण और शहरी गरीब परिवार की आर्थिक स्थिति | मनुष्य के सर्वांगीण विकास की मुख्य समस्या अज्ञानता होती है जिसको शिक्षा के जारिये दूर किया जा सकता है | ज्योतीराव ने हंटर आयोग में शिक्षा सम्बन्धी जो विचार प्रस्तुत किये वह आज भी प्रासंगिक है| अपने निवेदन में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा , नारी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा,, ग्रामीण क्षेत्र मे कृषी शिक्षा, शहरी क्षेत्र मे व्यवसाय परक शिक्षा आदि सभी सुझाव ने उस समय समाज में क्रांति लायी थी और वर्तमान भी वे विचार क्रांति लाने योग्य ही हैं | ज्योतीराव का उद्देश्य वंचित वर्ग को शिक्षित बनाकर लिपिक या अध्यापक बनाना नही था ,तो शिक्षित बन हर व्यक्ति अपने अधिकार के लिए स्वयं लढ सकता है, अपने समान होने के अधिकार को छीन सकता है ,उसमे अन्याय के प्रति लडने का साहस आ सकता है आदि सभी बातों को जानकर फुले ने अपने सामाजिक विचार को कृति मे लाकर समाज को नई दिशा दी यही उनकी सामजिक शिक्षा की सचमुच पहल थी जो आज के भी समाज को प्रभावित कर रही हैं | महात्मा फुले अपने समय से बहुत आगे थे | उनकी सोच और सुझाव आज भी प्रासंगिक हैं | उन्हे केवल समाज सुधारक कहना गलत ही होंगा वास्तव मे वे सामाजिक क्रांति के जनक थे| उनका पुरा जीवन धर्मभेद, वर्णभेद,जातिभेद और लिंगभेद के खिलाफ एक महान विद्रोह था|

5.2.6 वंचित, पिडीत, पिछडे समाज की आवश्यकताओं के संदर्भ में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के विकल्प प्रतिमानों का समीक्षात्मक विश्लेषण कर शिक्षविद् और शिक्षाशास्त्री के विचार से प्राप्त निष्कर्ष

१. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था वंचित समाज की शैक्षणिक आवश्यकताओं को औसत रूप से पूर्ण करने में असफल हुई जब कि,वंचित समाज की शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनके उत्थान हेतू शिक्षा व्यवस्था में काफी परिर्वतन करने की आवश्यकता हैं|

२. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की पाठ्यचर्या और शिक्षा के उद्देश्य वंचित समाज का सर्वांगीण विकास करने योग्य है पर वर्तमान में उनके जरुरतों को पुरा नही कर पा रही | वंचित समाज के कुल जनसंख्या का अनुपात सेबहुत कम छात्र शिक्षित हो रहा है | यह संख्या कम होने का कारण यह है की,जो सुविधा उन्हे दी जा रही है, उसमें क्रियान्वयन के स्तर पर होनेवाला भष्टाचार है और वंचित समाज में उसके प्रति जागरूकता के अभाव आदि कारणों से वंचित वर्ग के विकास में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था सफल नही हो पा रही है | शिक्षा व्यवस्था व्दारा जो सुविधाएँ, योजनाएँ प्रदान की जा रही है उसका क्रियान्वयन करनेवाले शासकीय, खाजगी कर्मचारी और स्कूल कर्मचारी उस सुविधा को वंचित समूह तक नही आने देते है | जो सुविधा उनके तक पहुँचती है उसका स्तर गिरा होता है और उस समाज मे सुविधाओं के बारे में जागृती का अभाव भी अधिक होता है | शिक्षा के उद्देशों में लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समता-समानता, बन्धुता जैसे तत्व का समावेश होते हुए भी उसका आदर्श समाज के सामने प्रस्तुति और उसके क्रियान्वयन में होने वाले अंतर के कारण पाठ्यचर्या और शिक्षा के उद्देश्य सफल नही हो पा रहे है |

३. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने वंचित समाज के आर्थिक विकास के लिए विशेष कदम उठाने चहिए | आर्थिक विकास के लिए कौशल विकास कार्यक्रम ,पढो और कमावों, आदि जैसे कार्यक्रम के जरीये उनका आर्थिक विकास करना चहिए | आर्थिक दुर्बलता के कारण सामाजिक,नैतिक, सांस्कृतिक विकास मे बाधाएँ आती है | वंचित वर्ग के विकास हेतू शिक्षा व्यवस्था ने जो भी सुविधा प्रदान की है उसे वंचित समूह तक पहुँचाने हेतू अपेक्षाकृत ज्यादा पारदर्शी एवं कडे नियमों के निर्माण के साथ-साथ उनके सही क्रियान्वयन की भी आवश्यकता है और वंचित वर्ग तक इन सुविधा का प्रचार-प्रसार होना चहिए | समाज में आज भी जातिवाद,पंथवाद,धर्मवाद जैसी कुरीतियाँ है,जिसके कारण सामाजिक विकास में बाधाएँ आती है | समाज का नैतिक स्तर गिर गया है | समाज के सामने आदर्श व्यक्ति और कथनी-करनी में समानता वाले व्यक्तिव की कमी आदि सभी बातें समाज का सर्वांगीण

विकास होने में बाधाएँ है | इन सभी समस्याओं के समाधान के बाद वर्तमान शिक्षा व्यवस्था वंचित समाज का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, विकास कर सकेगी |

४. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था वंचित वर्ग की संख्यात्मक वृध्दि करने मे सफल है, जिससे साक्षरता तो बढी हैं यह बात सत्य है पर उनका गुणात्मक स्तर अभी भी नीचा है इसके लिए अपेक्षित नितियाँ एवं सुधार आवश्यक है| वंचित समाज की आवश्यकताओं की पुष्टि हेतू उस समाज की स्थानिक समस्या और जरुरतों पहले सही मायने में समझना होगा और गुणात्मक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए उधार की शिक्षा व्यवस्था से परे हमे अपने समाज को पहले सही मायने में समझने और हमारे राष्ट्रीय लक्ष्यों को संज्ञान में रखते हुए शिक्षा व्यवस्था को उसके अनुरूप ढालने का प्रयास करना चहिए ताकि विविधता से भरपूर इस देश में वंचित समाज का गुणात्मक स्तर बढेगा |

५. भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा छात्र एवं शोधार्थी को प्रदान किये जानेवाली शोधवृत्ति वंचित समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण है और उससे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए सुविधा हो रही परन्तु वंचित समाज के कुल जनसंख्या के अनुपात से एक बहुत छोटा प्रतिशत समूहही स्नातक तक की शिक्षा पुरी कर पाता है इसके लिए आवश्यक अर्हता को वह प्राप्त कर सके ऐसी शिक्षा देना वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की जरूरत है |

६. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था वंचित समाज के सर्वांगीण विकास में असफल हैं | असफलता के अनेक कारण है जैसे वंचित समाज मे शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव ,मानसिक तौर पर भेदभाव ,राजनैतिक इच्छा शक्ति एवं वंचित समाज मे दृढसंकल्पता का अभाव, प्रशासकीय अवरुध्दता, स्कूल प्रशासन के कडे नियम, समाज की जरूरत और पाठ्यक्रम के विसंगत उद्देश्य आदि और भी अलग-अलग कारणों से वंचित समाज का सर्वांगीण विकास नही हो पा रहा है | इसके लिए उपरोक्त कारणों का निराकरण कर शिक्षा को और पारदर्शी बनाया जाये | वंचित समाज के लिए प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा तक के जो उद्देश्य है यह प्राप्त करने में सभी स्तर पर प्रयास होने चहिए |

७. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मे जाति आधारित आरक्षण नीति, मुफ्त शिक्षा, पोषण आहार, विद्यालय गणवेश, और अन्य शिक्षा सम्बन्धी सुविधा से वंचित समाज लाभान्वित हैं उसके कारण वंचित समाज की शिक्षा मे साक्षरता संख्या जरूर बढ़ गई , शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र बढे, उनका राष्ट्रीय कार्यो सहभाग बढा, वे राष्ट्रहित के मुख्य प्रवाह में आने लगे और शिक्षा के कारण कूछ प्रतिशत समाज में सर्वांगीण सुधार भी हुए पर सत्य यह है की, कुल अनुपात का बहुत छोटा समूह लाभान्वित अभी भी बहुत बडा समूह इस सुविधा से वंचित होने कारण इस वर्ग विकास रुक गया है | इस

वास्तविकता को बदलना होंगा जिसके लिए सर्वप्रथम हमे इस वर्ग को अपने अधिकार एवं सरकारी योजना के प्रति जागरूक बनाकर शिक्षा के महत्व को समझाकर उन्हे विकास के गति में लाना होंगा | वर्तमान पाठ्यचर्या एवं शिक्षाके उद्देश्यों में आवश्यक सुधार कर अधिक मात्रा में इन लोगों का समावेशन सुनिश्चित करना होंगा|

८. वंचित समाज के छात्र आर्थिक दुर्बल होने कारण अच्छे विद्यालय मे शिक्षा लेने मे असफल है आज शिक्षा के क्षेत्र में काफी स्पर्धा -प्रतिस्पर्धा बढ गई है जिसमे अपना स्थान निश्चित धनवान लोगों को तक मुश्किल हो चुका है| उसमें अपना विकास करना और भी कठीण है | स्पर्धा के इस युग में वंचित वर्ग का टिकना या उसमे अपना विकास करना असम्भव हो गया है | कारण सबसे ज्यादा वंचित,पिडीत,दलित लोग गाँवों मे रहते है या बस्तीयों में रहती है जो आर्थिक रूप से पूर्णत: दुर्बल होती है जिसके कारण वे अच्छे विद्यालय में प्रवेश नही पा सकते है | प्राथमिक शिक्षा सरकारी स्कूल से निशुल्क मिलती पर सरकारी प्राथमिक शिक्षा का स्तर बहुत ही गिर चुका है| जिससे उनका विकास नही हो सकता है | प्राथमिक शिक्षा जो नींव होती है वे मजबूत और सही होनी चहिए जिसके लिए अच्छी शिक्षा जरुरी है सरकारी स्कूल में विभिन्न सुविधा है पर शिक्षा का स्तर शिक्षक को ने गिरा रखा है जिसके कारण प्राथमिक शिक्षा के आधार से उच्च शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ वंचित वर्ग के छात्र है | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने इसके लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम २००९ के तहत आर्थिक दुर्बल बच्चो के लिए २५ % आरक्षण दिया गया है परन्तु यह क्रियान्वयन स्तर पर यह असफल है | जिसके लिए सामान्य विद्यालय प्रणाली जैसी शिक्षा व्यवस्था करनी चहिए|

९. वंचित समाज की मुलभूत आवश्यकताओं का वर्तमान शिक्षा व्यवस्था समाधान नही कर पा रही | कारण शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करती है जिसमें उसका आर्थिक विकास भी जरुरी होता है आज उच्च शिक्षा प्राप्त छात्र बेरोजगारी के कारण दर-दर नौकरी के लिए भटक रहे है जिससे उनका मानसिक बल कमजोर हो रहा है , वे अपने परिवार की जरुरत को पुरा नही कर पा रहा| ऐसे स्थिती में वह विफल मानसिकता का शिकार होकर अपने आप को कमजोर समझते हुए मुलभूत जरूरतों को पुरा नही कर पा रहा और लगातार बढती आबादी के कारण सबको रोजगार देने में व्यवस्था असफल है जिसमें वंचित समूह की अवस्था और भी गम्भीर है |

१०. प्रचलित शिक्षा व्यवस्था ने वंचित समाज के विकास हेतू अनेक सुविधा व्दारा उनके विकास हेतू प्रयास किये है| प्रचलित शिक्षा व्यवस्था ने वंचित समाज के विकास हेतु निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा, मध्यान्ह भोजन, आवास, जाति आरक्षण, विभिन्न स्तर पर छात्र वृत्ति रकम, मुफ्त बस सेवा, घर तक स्कूल व्यवस्था, संगणक सेवा, विद्यालय गणवेश, विद्यालय साईकल सेवा,आदि सुविधा

वंचित समाज के विकास हेतू कार्यरत है जो लाभदायक भी है | पर बहुत छोटा अंश उन्नत या लाभान्वित हुआ है जिसका कारण समुचित एवं पारदर्शी क्रियान्वयन प्रणाली का अभाव है | शिक्षा व्यवस्था ने वंचित समाज के विकास हेतू हर समय प्रयास किये है, शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन लाने हेतू जो महत्वपूर्ण कदम उठाए गये उसमे हमारे संविधान में दर्ज अधिकारों एवं अन्य अनुच्छेद \संशोधन को सर्वोपरी रखा जाना चहिए जिनके फलस्वरूप वंचित समाज को कूछ विशेषाधिकार मिले और उनका विकास हो सके |

5.2.7 वर्तमान में शिक्षा की चुनौतियाँ और प्रासंगिकता का अध्ययन करके वंचित, पिडीत, पिछडे समाज के शिक्षा में परिवर्तन हेतू नये प्रतिमान के निर्माण हेतू शिक्षविद् और शिक्षा शास्त्री से प्राप्त सुझाव के आधार पर निष्कर्ष :

१. महात्मा फुले भारतीय समाज के शिक्षा के आधुनिक जनक थे | शिक्षा हर दृष्टी से सुधार का प्रवेशद्वार है, यह उनकी धारणा थी | उन्होनें शुद्रों,अतिशुद्रों तथा स्त्रीयों के लिए शिक्षा के द्वार खुले किये | दलित और शोषित वर्ग को मानव होने के हक दिलाये | जिसके लिए उन्होनें जीवन भर संघर्ष किया | १९ वी शताब्दी में भारत में युगान्तान्कारी परिवर्तन का सूत्रपात हुआ सदि के पुर्वाध और उत्तरार्ध दोनों ही राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं अन्य क्षेत्र में बडे उथल-पुथल के साक्षी के रहे है | १८२७ तक सम्पूर्ण भारत में अंग्रेजो ने अपना अधिकार कर लिया था | ब्राह्मण वर्ग का जातिवाद और धर्म के आधार पर दलित का शोषण, वर्णव्यवस्था पर आधारित समाज व्यवस्था ,समाज मे विभिन्न प्रथा, कुरीति,परम्परा आदि सभी कारणों से समाज का विकास रुक गया था | ऐसे सामाजिक पृष्टभूमि में समाज में परिवर्तन करना चूनौती पूर्ण कार्य था| दलित, शोषित समाज का विकास शिक्षा से ही हो सकता है यह बात फुले ने जानी और उसी दिशा में अपने सामाजिक कार्य को आगे बढाया | उन्होनें विषमता के प्रवाह को समता, स्वतंत्र, बंधुता, मानवता के विचार से प्रभावित किया | शिक्षा के द्वार को शुद्रों, अतिशुद्रों तथा स्त्रीयों के लिए खुला कर दिया | दलित और शोषित वर्ग को उनके मानवी हक दिलाने के लिए उन्होनें जीवन भर संघर्ष किया | वे सही मायने में समाज-परिवर्तन के अग्रदूत थे |

२. फुले महोदय ने हंटर आयोग मे शिक्षा का जो प्रतिमान रखा वह महत्वपूर्ण था | तत्कालीन सामाजिक पृष्ठभूमि को समझते हुए फुले महोदय ने हंटर आयोग मे शिक्षा का जो प्रतिमान रखा वह महत्वपूर्ण था | आज वंचित वर्ग का शिक्षा के क्षेत्र में जो विकास हुआ है उसकी नींव फुले का प्रतिमान हम कह सकते है | आयोग के सामने प्रस्तुत विचार की निशुल्क शिक्षा,अनिवार्य शिक्षा,

शिक्षक के वेतन ,ग्रामीण कृषी शिक्षा आदि अनेक बाते आज के शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव रखी हुई है | वंचित वर्ग को उस समय शिक्षा के लिए प्रेरित करना और उस योग्य सुविधा के लिए प्रयास करना फुले के सामाजिक कार्य की पावती है | वर्तमान मे वंचित वर्ग के लिए नये प्रतिमान की आवश्यकता है क्योंकी वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में स्पर्धा-प्रतिस्पर्धा बढ़ चुकी है | संगणक के इस युग में वंचित वर्ग बहुत पीछे है | विश्व के विकास की तेज रफ्तार में वंचित वर्ग को टिकना है तो उनके शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता है | वंचित वर्ग की शिक्षा स्थिति गम्भीर है इस स्थिति में विकल्प प्रतिमान की जरूरत है | वर्तमान मे वंचित वर्ग के विकास लिए नये प्रतिमान की आवश्यकता है |

३. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था वंचित समाज की आवश्यकताओं को औसत रूप से पूर्ण करने में सफल नही है | वंचित समाज की शैक्षणिक,नैतिक,भावनिक,सामाजिक एवं आर्थिक आदि जरुरतों को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पुरा नही कर पा रही | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से वंचित समाज का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, विकास नही हो रहा हैं | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने वंचित समाज के आर्थिक विकास के लिए विशेष कदम उठाने चहिए | आर्थिक विकास के लिए कौशल विकास कार्यक्रम ,पढो और कमावों, आदि जैसे कार्यक्रम के जरीए उनका आर्थिक विकास करना चहिए | आर्थिक दुर्बलता के कारण सामाजिक,नैतिक सांस्कृतिक आदि विकास मे बाधाएँ आती है | वंचित वर्ग के विकास हेतू शिक्षा व्यवस्था ने जो भी सुविधा प्रदान की है उसे वंचित समूह तक पहुँचाने हेतू अपेक्षा कृत ज्यादा पारदर्शी एवं कडे नियमों के निर्माण के साथ-साथ उनके सही क्रियान्वयन की भी आवश्यकता है | इन सभी कारणों के अभाव में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से वंचित समाज का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, विकास नही पा रहा है |

४. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था वंचित घटकों की संख्यात्मक वृध्दि करने मे सफल है, पर उनका गुणात्मक स्तर नीचा है | भारत देश की शिक्षा व्यवस्था शिक्षा का गुणात्मक विकास करने मे असफल है | जिसके लिए लगातार काफी प्रयास भी हो रहे पर आज भी उसमे सफलता नही मिल पायी है | जिसके कारण देश आज भी विकसित प्रगत देश मे अपना स्थान निश्चित नही कर पा रही है | देश में वंचित, पिडीत,दलित समाज का गुणात्मक स्तर जब तक नही बढता तब तक देश का विकास नही हो सकता | आज शिक्षा व्यवस्था केवल शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए सेवा प्रस्तुत कर रही परिवर्तन नही | सेवा कुछ समय के लिए होती है जो वंचित समाज तक पहुँचते -पहुँचते समाप्त हो जाती है | या उसका उद्देश्य समाप्त हो जाता है | गुणात्मक स्तर बढाने के लिए छात्र को सही मायने मे शिक्षा के उद्देश्य समझने चहिए | शिक्षा के उद्देश्य पारदर्शी और जीवनपयोगी होने चहिए | नैतिक रूप से आदर्श

होने चहिए | उद्देश्य को पुरा करने वाला शिक्षक प्रामाणिक होना चहिए | शासन व्यवस्था के रहित शिक्षा, राजकीय दबाव के रहित शिक्षा, अधिकारी के तणाव मुक्त शिक्षा, जाति रहित शिक्षा, धर्म रहित शिक्षा, मानसिक गुलामी रहित शिक्षा आदि रहित शिक्षा व्यवस्था वंचित वर्ग का गुणात्मक विकास कर सकती है |

५. वर्तमान मे भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा छात्र एवं शोधार्थी को प्रदान किये जानेवाली शोधवृत्ति वंचित समाज का विकास कर रही है पर वंचित समाज को उसके प्रति जागृत करना होंगा | उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करना होगा | अवसर को बढावा देना होंगा | कुछ शर्ते शिथिल करने होंगे | क्रियान्वयन मे कठोर होना होंगा | वंचित समाज की शिक्षा के प्रति मानसिकता को बदलना होंगा | वर्तमान मे भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा छात्र एवं शोधार्थी को प्रदान किये जानेवाली शोधवृत्ति वंचित समाज का विकास कर रही है | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था वंचित.पिडीत, दलित वर्ग को शिक्षा के अवसर प्रदान करने हेतु विविध सेवा-सुविधा दे रही है जिससे वे अपनी पढाई स्वयं पुरी कर सकते है पर चिन्ता का विषय है की कितने छात्र इस सुविधा का लाभ ले रहे है| उस समाज में इस सुविधा के बारे में कितनी जागृती है और क्या छात्र उच्च शिक्षा तक वह पहुँच पा रहा आदि सभी कारण इस शोधावृति से वंचित छात्र को शिक्षा देने से वंचित ही रख रही है |

केंद्र और राज्य सरकार व्दारा चलाई जा रही विभिन्न शैक्षिक योजनाएँ एवं उद्देश्य जैसे समानता की शिक्षा, छात्र वृत्ति योजना तथा राजीव गांधी राष्ट्रीय छात्र वृत्ति ,कौशल विकास योजना , शिक्षक पात्रता परीक्षा(नेट) हेतू अतिरिक्त कोंचीग की व्यवस्था आदि का वंचित के विकास में योगदान है |

६. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था वंचित समाज के सर्वांगीण विकास मे असफल हैं | वंचित,पिडित वर्ग का आर्थिक, नैतिक, सामाजिक, भावनिक आदि सभी विकास को मद्दे नजर रखते हुए पाठ्यक्रम बनाने का प्रयास हमारी शिक्षा नीति हर समय करती आयी है परन्तु फिर भी सर्वागीण विकास उस गति और दिशा में नही हो रहा | हमारे देश की अधिकतर जनता गरीबी की स्थिति मे जीवन व्यतीत कर रही | जहाँ पेट भर खाने के लाले हो वहा उपरोक्त विकास असम्भव है | सर्वांगीण विकास में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है की व्यक्ति की मुलभूत जरुरत है रोजगार, जिसे देने में हमारी शिक्षा व्यवस्था असफल है | शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रत्येक छात्र को नोकरी हमारी शिक्षा व्यवस्था नही दे सकती जिसके कारण उच्च शिक्षा प्राप्त छात्र भी आज बेरोजगार है | जिसके अन्य विकास होने के

बावजुद भी वह विकास के प्रवाह से वंचित है | विकास के लिए हमारे पाठ्यक्रम में कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण , कमावों पढो आदि जैसे उपक्रम पाठ्यक्रम में होने चहिए | पढाई खत्म होते ही वे अपना रोजगार स्वयं निर्माण कर सके | जिससे उसका आर्थिक विकास हो सके और वे अपने सर्वागीण विकास के लिए आगे पढाई भी जारी रख सके उसका अपडेट पाठ्यक्रम उसे सतत मिलना चहिए |

७. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मे जाति आधारित आरक्षण नीति, मुफ्त शिक्षा, पोषण आहार, विद्यालय गणवेश, और अन्य शिक्षा सम्बन्धी सुविधा से वंचित समाज जरूर लाभान्वित होता हैं | इसी सुविधा के कारण आज वंचित,पिडीत,दलित वर्ग अपनी शिक्षा पुरी कर सकता है | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मे जाति आधारित आरक्षण नीति, मुफ्त शिक्षा, पोषण आहार, विद्यालय गणवेश, और अन्य शिक्षा सम्बन्धी सुविधा से वंचित समाज लाभान्वित हैं उसके कारण वंचित समाज की शिक्षा मे साक्षरता संख्या जरूर बढ़ गई , शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र बढे, उनका राष्ट्रीय कार्यो सहभाग बढा, वे राष्ट्रहित के मुख्य प्रवाह में आने लगे और शिक्षा के कारण कूछ प्रतिशत समाज में सर्वांगीण सुधार भी हुए पर सत्य यह है की, कुल अनुपात का बहुत छोटा समूह लाभान्वित हुआ है अभी भी बहुत बडा समूह इस सुविधा से वंचित होने कारण इस वर्ग का विकास रुक गया है | इस वास्तविकता को बदलना होंगा जिसके लिए सर्वप्रथम हमे इस वर्ग को अपने अधिकार एवं सरकारी योजना के प्रति जागरूक बनाकर शिक्षा के महत्व को समझाकर उन्हे विकास के गति में लाना होंगा | वर्तमान पाठ्यचर्या एवं शिक्षा के उद्देश्यों में आवश्यक सुधार कर अधिक मात्रा में इन लोगों का समावेशन सुनिश्चित करना होंगा | आज दुर्गम ,पहाडी इलाको में सबसे अधिक प्रमाण मे वंचित समाज बसा हुआ है उनके तक सुविधा नही पहुँच पाती है उनके लिए विशेष शिक्षक और विशेष पाठ्यक्रम होने चहिए उन्हे रोजगार देने वाले पाठ्यक्रम जरुरी होने चहिए | वर्तमान मे देश में वंचित वर्ग का उच्च शिक्षित बेरोजगार युवा शिक्षा व्यवस्था के पास है जो इस कार्य को अधिक वेतन के साथ अधिक सहृदयता से और इमानदारी से कर सकता है जिससे दोनों का विकास हो सकता है |

८. वंचित समाज के छात्र आर्थिक दुर्बल होने कारण अच्छे विद्यालय मे शिक्षा लेने मे असफल है वंचित वर्ग का बहुत ही कम प्रतिशत वर्ग अच्छे विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करते है | ज्यादा अधिक वर्ग सरकारी स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहा है | अच्छे स्कूल में शिक्षा नही ले पाना जिसका कारण आर्थिक दुर्बलता है | प्राथमिक शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास का केंद्रबिंदू होता है, जो उसका जीवन प्रभावित करती है | शासकीय आँकडो के अनुसार कुल अनुपात का बहुत कम प्रतिशत छात्र अच्छे

विद्यालय मे पढ रहा है ज्यादातर वंचित वर्ग सरकारी स्कूल मे नामांकित है | सरकारी स्कूल की स्थिति और शिक्षा का स्तर बहुत बेकार स्थिती में है | जिसका विकास अधिक होना चहिए उसे ही अच्छी शिक्षा नही मिल पा रही है | शिक्षा व्यवस्था ने सरकारी स्कूल का विकास स्तर बढाना चहिए| सरकारी स्कूल मे भौतिक सुविधा बढाकर अच्छे शिक्षक की नियुक्ति कर शिक्षक के कार्य का सतत निरीक्षण कर उसमे समय-समय पर बदलाव करने चहिए |

९. वंचित समाज की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ती हेतू वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने अपनी शिक्षा नीति में जो लिखा है उसका क्रियान्वयन करना जरुरी है | वंचित वर्ग की मुलभूत जरुरत पुरी करने के लिए हमारे पाठ्यक्रम में कौशल विकास के घटक ,व्यावसायिक प्रशिक्षण, ग्रामीण भागों में कृषि प्रगत शिक्षा का प्रशिक्षण, दस्तकारी की शिक्षा, शहरी भागों में औद्योगिक शिक्षा आदि का समावेश पाठ्यक्रम में कर प्रथम उनकी मुलभूत जरुरत को पुरा किया जा सकता है | इसके बावजुद उच्च शिक्षा प्राप्त वर्ग को देश के विकास में योगदान हेतू अधिक अवसर देने चहिए| शोध के क्षेत्र मे सहयोग बढाने चाहीए | वंचित उच्च शिक्षा प्राप्त छात्र सहजता से राष्ट्रहित, राष्ट्रविकास मे अपना योगदान दे सके | वंचित, पिडीत,दलित समाज को देखने का अन्य समाज का नजरियाँ बदलना चहिए |

१०. प्रचलित शिक्षा व्यवस्था में वंचित,पीडीत समाज के विकास हेतू शिक्षक, उनके कार्य, उनका प्रशिक्षण, उनके वेतन, शिक्षा पर खर्चा, विद्यालय, शिक्षा का माध्यम, पाठ्यक्रम आदि में विशेष बदलाव की आवश्यकता है | प्रचलित शिक्षा व्यवस्था मे इनके विकास के लिए काफी प्रयास हो रहे है | परन्तु वंचित समाज की शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनके शैक्षिक विकास हेतू शिक्षा व्यवस्था में काफी परिर्वतन करने की आवश्यकता हैं | महात्मा फुले ने दलित,स्त्री,वंचित समाज के पिछडेपन का जो कारण बताया वह था शिक्षा का अभाव |

5.3 भावी शोध के लिए सुझाव

“महात्मा ज्योतिबा फुले के नारी शिक्षा की सामाजिक भूमिका का समीक्षात्मक विश्लेषण”
“महात्मा ज्योतिबा फुले के साहित्य की समाज परिवर्तन में भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन ”
“महात्मा ज्योतिबा फुले का दलित वर्ग की शैक्षणिक प्रगति की सामाजिक भूमिका का समीक्षात्मक विश्लेषण”